25

आधुनिक संशयवादी आन्दोलन के संस्थापक

कई बरस साइंटिफिक अमेरिकन पत्रिका में गणित का रोचक और पॉपुलर कॉलम लिखने वाले मार्टिन गार्डनर अपनी बेबाक टिप्पणियों के लिए जाने जाते थे। पिछले पचास वर्षों से वे छद्म-विज्ञान पर तीखे प्रहार करते रहे। विज्ञान में व्याप्त आस्थाओं, मान्यताओं और सिद्धान्तों की चीर-फाड़ उनका प्रिय शगल रहा है। इस महत्वपूर्ण व्यक्तित्व की हाल ही में मई, 2010 को मृत्यु हुई।

आस्तिक या नास्तिक होने के क्या मायने होते हैं? क्या ईश्वर है? अगर है तो क्या वह सर्वकल्याणकारी और सर्वशक्तिमान है? या फिर इनमें से बस कोई एक? विचारों और मान्यताओं को मूल्यगत मानदण्डों पर खरा उतरना होगा या भावनात्मक मानदण्डों पर? ऐसे ही अनेक सवालों पर उनके विचार प्रस्तुत करता है यह साक्षात्कार।

59

स्वीकृत ज्ञान : भूगोल में निहित राजनैतिक संकेतार्थ

पाठ्य पुस्तकें हमें अपनी व्यक्तिगत सीमाओं के परे स्थित संसार के दर्शन कराती हैं लेकिन इनकी भी कुछ सीमाएँ होती हैं जो बनती हैं लेखन के दौरान अपनाई गई विचारधारा से। भूगोल की किताबें जब मानव-प्रकृति सम्बन्ध की बात करती हैं तो मनुष्य और प्रकृति को दो इतर चीज़ों के रूप में लेकर चलती हैं। पुस्तकों में इनके प्रस्तुतिकरण के अलग व व्यापक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक निहितार्थ होते हैं। अक्सर पुस्तकें इनके कुछ ही पहलुओं को उजागर करती हैं। वस्तुतः भूगोल परिस्थितियों के अनुरूप बदलता है। आधुनिक विकास और संसाधनों की उपलब्धता ने परिस्थितियों को बदल दिया है और इस बदलाव ने भूगोल को।

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-14 (मूल अंक-71), सितम्बर-अक्टूबर 2010

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

7 | **बीजों का अंकुरण**
आमोद कारखानिस

19 | **दर्पण झूठ न बोले**
मार्टिन गार्डनर

25 | **आधुनिक संशयवादी आन्दोलन...**
मार्टिन गार्डनर के साथ साक्षात्कार

39 | **एक मेला ऐसा भी**
संदीप दिवाकर

47 | **सार्वजनिक कुंजी कूटलेखन**
एस. श्रीनिवासन

59 | **स्वीकृत ज्ञानः भूगोल में निहित ...**
यमुना सन्नी

77 | **कहानियों का पेड़**
रिनचिन

89 | **सबका जाना-पहचाना - पान चूँचड़ा**
के.आर. शर्मा